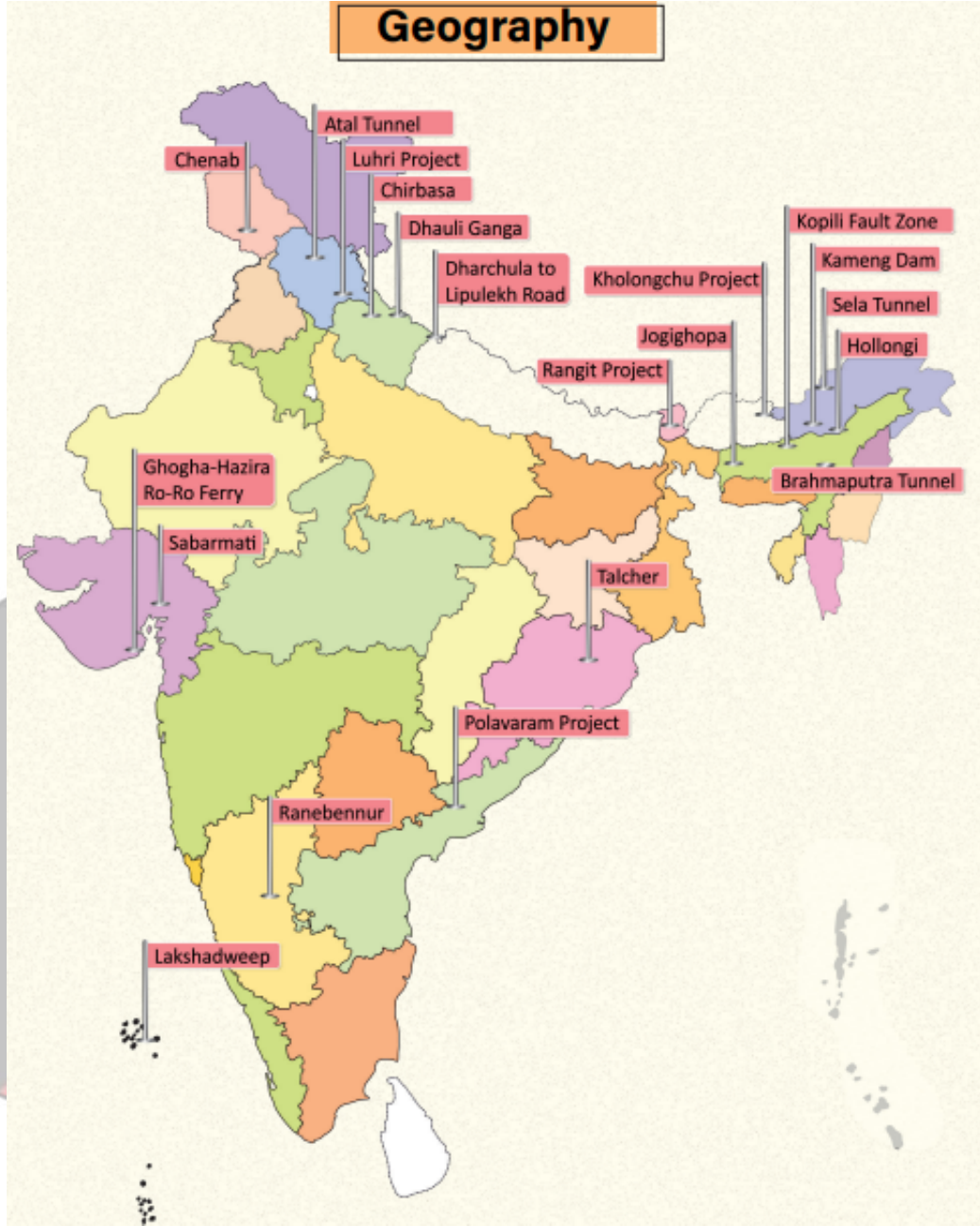


चर्चति स्थान-भारत



भूगोल //

अटल सुरंग (Atal Tunnel)

संदर्भ

- हिमाचल प्रदेश में 3,000 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर स्थिति रोहतांग में [अटल सुरंग](#) का उद्घाटन किया गया ।

प्रमुख बंध

- सीमा सड़क संगठन (Border Roads Organisation- BRO) द्वारा निर्मित 9.02 किलोमीटर लंबी यह सुरंग विश्व की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग है। यह मनाली को लाहौल-स्पीति घाटी से जोड़ती है।
- सैन्य लॉजिस्टिक्स के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण यह सुरंग सशस्त्र बलों को लद्दाख तक पहुँचने के लिये बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगी।

ब्रह्मपुत्र सुरंग (Brahmaputra Tunnel)

संदर्भ

- केंद्र सरकार ने असम में ब्रह्मपुत्र नदी में एक जलमग्न सुरंग (underwater tunnel) के निर्माण को सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान की है।

प्रमुख बंध

- यह सुरंग असम राज्य में गोहपुर (NH-54) को नुमालीगढ़ (NH-37) से जोड़ेगी।
- यह सुरंग सामरिक महत्व रखती है क्योंकि यह पूर्वोत्तर राज्यों असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच पूरे वर्ष संपर्क की सुविधा प्रदान करेगी।
- राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (National Highways and Infrastructure Development Corporation Limited- NHAIDCL) ने इस सुरंग के निर्माण के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका की लुइस बर्जर (Louis Berger) फर्म को अनुबंधित किया है।

चनिब नदी (Chenab River)

संदर्भ

- जम्मू-कश्मीर में चनिब नदी पर विश्व का सबसे ऊँचा रेलवे सेतु बनाया जा रहा है।

चनिब के बारे में

- यह हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिलों में ऊपरी हिमालय से निकलने वाली दो नदियों—**चंद्र और भागा** के संगम से बनती है।
- त्रिमु (Trimmu) के पास झेलम नदी के इससे आकर मिलने के बाद चनिब संधि नदी की एक सहायक नदी सतलुज में जाकर मिल जाती है।
- ऋग्वेद में चनिब नदी को **असकिनी (Asikni)** कहा गया था, जो इसके गहरे रंग के जल को संदर्भित करता था।
- सलाल बाँध 690 मेगावाट की पनबजली परियोजना है जो जम्मू और कश्मीर राज्य के रियासी के पास चनिब नदी पर कार्यान्वित है।
- चनिब पर रतले पनबजली संयंत्र (Ratle Hydroelectric Plant) और कीरू पनबजली संयंत्र (Kiru Hydroelectric Power Project) का निर्माण प्रस्तावित है।

चरिबासा (Chirbasa)

संदर्भ

- चरिबासा में ब्लैक कार्बन अनुसंधान परियोजना स्थापित की गई है।

चरिबासा के बारे में

- यह **गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान** (उत्तराखण्ड) में भागीरथी नदी के तट पर स्थित है।
- यह स्थान गोमुख और तपोवन के प्रसिद्ध ट्रेकिंग मार्ग पर 3500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।
- गंगोत्री ग्लेशियर के मार्ग में चरिबासा और भोजबासा (चरिबासा से कुछ किलोमीटर आगे) नामक स्थानों पर स्थापित दो मौसम स्टेशनों के माध्यम से वैज्ञानिक इस क्षेत्र में मौजूद ब्लैक कार्बन वृषि रूप से ग्लेशियरों की निगरानी कर रहे हैं।

कामेंग बाँध (Kameng Dam)

संदर्भ

- हाल ही में **कामेंग जलविद्युत परियोजना** (Kameng Hydropower Project) पूरी तरह से चालू हो गई है।
- कामेंग परियोजना के बारे में**
- अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले में स्थापित कामेंग जलविद्युत परियोजना (600 मेगावाट) एक **रन-ऑफ-द-रिवर परियोजना** है जो बचिम और तेंगा नदियों (कामेंग नदी की दो सहायक नदियों) के जल-प्रवाह का उपयोग करेगी।

■ कामेंग नदी

- इसका उद्गम तवांग ज़िले में बर्फ से ढके गोरी चैन परवत (Gori Chen mountain) के नीचे स्थिति हमिनद झील से होता है।
- यह अपनी नचिले प्रवाह क्षेत्र में गुफति नदी (Braided River) बन जाती है और ब्रह्मपुत्र नदी की प्रमुख सहायक नदियों में से एक है।
- कामेंग नदी पूर्वी कामेंग और पश्चिमी कामेंग ज़िलों के बीच की सीमा का निर्माण करती है और इसके साथ ही, इसके पश्चिमी में सेसा (Sessa) और ईगलनेस्ट (Eaglenest) अभयारण्यों और पूर्व में पक्के बाघ अभयारण्य (Pakke Tiger Reserve) के बीच की सीमा भी बनाती है।

- कामेंग जलवदियुत परियोजना पूर्वोत्तर क्षेत्र के सबसे बड़े जलवदियुत संयंत्र का परचालन करती है।

खोलोंगछु जलवदियुत परियोजना (Kholongchu Hydroelectric Project)

संदर्भ

- भारत और भूटान ने भूटान में [खोलोंगछु संयुक्त उद्यम जलवदियुत परियोजना](#) (Kholongchhu Joint Venture Hydroelectric Project) के निर्माण के लिये एक समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं।

भारत-भूटान जलवदियुत परियोजनाएँ

- खोलोंगछु 600 मेगावाट क्षमता की रन-ऑफ-द-रिवर परियोजना है जो पूर्वी भूटान के त्राशियांगत्से (Trashiyangtse) ज़िले में खोलोंगछु नदी के नचिले मार्ग पर स्थापित है।
- वर्तमान में द्विपक्षीय सहयोग की चार जलवदियुत परियोजनाएँ (2,100 मेगावाट से अधिक क्षमता) भूटान में परचालित हैं। इनमें शामिल हैं:
 - चुखा जलवदियुत परियोजना (Chukha Hydroelectric Project)
 - कुरुछु जलवदियुत परियोजना (Kurichu Hydroelectric Project)
 - ताला जलवदियुत परियोजना (Tala Hydroelectric Project)
 - मंगदेछु जलवदियुत परियोजना (Mangdechhu Hydroelectric Project)
- इसके अलावा, दोनों देश पुनात्सांगछु परियोजना (Punatsangchhu Project) सहित अन्य चालू परियोजनाओं को तेज़ी से पूरा करने की प्रक्रिया में हैं।

लुहरी जलवदियुत परियोजना (Luhri Hydropower Project)

संदर्भ

- हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने [लुहरी जलवदियुत परियोजना](#) के निर्माण को मंजूरी दी है।

लुहरी जलवदियुत परियोजना के बारे में

- लुहरी परियोजना हिमाचल प्रदेश के शमिला और कुल्लू ज़िलों में स्थिति है।
- इसे सतलज जल वदियुत नगिम लिमिटेड (SJVN) द्वारा बलिड-ऑन-ऑपरेट-मेंटेन (BOOM) आधार पर कार्यान्वित किया जा रहा है।

रंगति वदियुत परियोजना (Rangit Power Project)

संदर्भ

- जल वदियुत नगिम लिमिटेड (JPCL) की तनावग्रस्त आसतियों वाली रंगति-IV जलवदियुत परियोजना को राष्ट्रीय जल वदियुत नगिम (National Hydro Power Corporation- NHPC) लिमिटेड को सौंप दिया गया है।

परियोजना के बारे में

- रंगति बाँध सकिक्मि में तीस्ता नदी की एक प्रमुख सहायक नदी रंगति पर कार्यान्वित एक रन-ऑफ-द-रिवर (run-of-the-river) वदियुत परियोजना है।
- रंगति नदी तालुंग ग्लेशियर (Talung glacier) से निकलती है और यह सकिक्मि के ही मेली (Melli) में तीस्ता नदी से मिलती है।

धारचूला से लपिलेख रोड (Dharchula to Lipulekh Road)

संदर्भ

- सीमा सड़क संगठन (Border Roads Organisation- BRO) ने चीनी सीमा के नजदिक धारचूला से लपुलेख तक सड़क नरुमाण कार्य पूरा कर लया है, जो [कैलाश-मानसरोवर यात्रा मार्ग](#) के रूप में प्रसदुध है।

सड़क के बारे में

- यह सड़क चीनी सीमा के नजदिक धारचूला के घाटीबागर से लपुलेख तक बनाई गई है।
- तवाघाट के नजदिक मंगती शवरर से लेकर व्यास घाटी में स्थतुतु गुंजी तक के दुर्गम हडडलयाी क्षेत्र और भारत-चीन सीमा के नजदिक स्थतुतु भारतीय सुरकषा चौकयुुु तक अब एक कंकरीट सड़क दवारा पहुँचना संभव हुु गया है।
- यह सड़क 17,000 फीट की ऊँचाई पर स्थतुतु लपुलेख दर्रे पर समाप्त हुुती है। लपुलेख दर्रे से कैलाश परवत लगभग 97 कडडी उत्तर तडडत में स्थतुतु है।
- भारत-चीन-नेपाल के ट्राई-जंकशन के नजदिक स्थतुतु लपुलेख दर्रा उच्च हडडलयाय के इस खंड का सबसे नचला डडु है।

धौलीगंगा नदी (Dhauliganga River)

संदर्भ

- हाल ही में उत्तरखंड में धौलीगंगा नदी में हडडनद डडु (Glacial floods) या 'फ्लैश फ्लड' (Flash Flood) की स्थतुतुदरखी गई।

धौलीगंगा के बारे में

- नीती दर्रे (उत्तरखंड) के आसपास के क्षेत्र से उत्पन्न धौलीगंगा वसरूप प्रवाह में डडु नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान से हुकर गुजरती है।
- धौलीगंगा हडडलयाय से उतरकर मैदानों में डडुने वाली पवतर नदी गंगा की सहायक नदयुुु में से एक है जो अलकनंदा में डडुलु जाती है।
- धौलीगंगा से ःषगंगा नदी रेनी (Raini) नामक स्थान पर डडुलुती है और यही पर डडुलुली परयुुोजना डडुंध को आपदा का सामना करना पडा था।
- यह नदी एक 'V' डडुडु लेते हुुए वपरीत दशा में (उत्तर की ओर) धौलीगंगा के रूप में तपोवन से गुजरते हुुए तडु डडुलुती है जब तक कडु यह जोशीड के पास वषुणुप्रयाग में अलकनंदा नदी से नडुी डडुलु जाती।
- धौलीगंगा अलकनंदा की प्रडुख सहायक नदयुुु में से एक है; कडुछ अन्य प्रडुख सहायक नदयुुु में नंदाकनी, पडुडर, डंदाकनी और डडुगीरथी शामिल हैं।

घोघा-हज़ीरा रो-रो फेरी (Ghogha-Hazira Ro-Ro Ferry)

संदर्भ

- पछले वर्ष प्रधानडुतुरी डडुदी ने गुजरात में [घोघा-हज़ीरा रो-पैक्स फेरी सेवा](#) (Ghogha-Hazira Ro-Pax ferry service) का वरुचुअल उदघाटन कया था।

घोघा-हज़ीरा फेरी के बारे में

- यह फेरी घोघा (एक डडुआरा डडुसुती और पुराना डंडरगाह) और हज़ीरा (वाणजुडकडु गरीनफीलड डंडरगाह) के डडुच चलती है।
- डडुवनगर (खाडी के पशुचडुडी कनारे पर स्थतुतु) और दकषण गुजरात (पूरुव में स्थतुतु) के डडुच आने-डडुाने वाले यात्रयुुु को एक वैकल्पक डडुडुरी डडुग प्रदान कर खंडात की खाडी को सेतुडडुध करने के लया यह सेवा शुरु की गई थी।

होलोंगी (Hollongi)

संदर्भ

- भारतीय वडडुनपतुतन प्राधकुरण (AAI) ने होलोंगी में एक [गरीनफीलड हवाई अडुडु](#) वकसतुतु करने की युुोजना बनाई है।

होलोंगी के बारे में

- होलोंगी अरुणाचल प्रदेश में स्थतुतु है। यह राज्य की राजधानी ईटानगर के दकषण में स्थतुतु है।
- परचालतुतु होने पर यह हवाई अडुडु अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर को सेवाएँ प्रदान करेगा। वरुतडुन में राज्य की राजधानी से नजदकतडु हवाई अडुडु 80 कलुडुडुीटर दूर स्थतुतु असडु का लुलुलुडुडी (Lilabari airport) हवाई अडुडु है।

जोगीघोपा (Jogighopa)

संदर्भ

- केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने असम के जोगीघोपा में देश के पहले [मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क](#) (Multi-Modal Logistics Park- MMLP) की आधारशिला रखी।

जोगीघोपा के बारे में

- जोगीघोपा **ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी तट पर स्थित एक छोटा शहर** है। यहाँ ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित एक संयुक्त सड़क-रेल पुल उपयोग में है, जिसे 'नरनारायण सेतु' के नाम से जाना जाता है।
- शहर में पाँच **शैलकृत गुफाओं (Rock-Cut Caves)** के अवशेष मौजूद हैं जो **सालस्तंभ काल (Salasthambha period)** की वास्तुकला के उदाहरण हैं और **भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI)** द्वारा संरक्षित किये जा रहे हैं।
- इसकी MMLP परियोजना के तहत कार्यान्वयित विकास कार्यों में रेलवे साइडिंग, कंटेनर टर्मिनल, वेयरहाउसिंग, गैर-कार्गो प्रसंस्करण, ट्रक टर्मिनल, सामान्य सुविधाएँ और समर्थनकारी अवसंरचना एवं साधन आदि शामिल होंगे।
- MMLP के तहत सड़क, रेल, जलमार्ग और हवाई परिवहन सुविधाओं के साथ **जोगीघोपादक्षिण-पूर्व एशिया के साथ-साथ शेष उत्तर-पूर्व के लिये भारत का प्रवेश द्वार** बन जाएगा।
- जोगीघोपा में निर्मित MMLP सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की '[भारतमाला परियोजना](#)' के अंतर्गत देश का पहला अंतरराष्ट्रीय मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क होगा।

कोपिली फॉल्ट ज़ोन (Kopili Fault Zone)

संदर्भ

- असम में '[हिमालयी फ्रंटल थ्रस्ट](#)' (Himalayan Frontal Thrust) के नजिक स्थित **कोपिली फॉल्ट ज़ोन** में हाल ही में एक शक्तिशाली भूकंप आया।

कोपिली फॉल्ट ज़ोन के बारे में

- कोपिली फॉल्ट ज़ोन एक 300 किलोमीटर लंबी और 50 किलोमीटर चौड़ी **ख़ीय आकृतियाँ रेखिक विशेषता (Lineament)** है जो मणिपुर के पश्चिमी भाग से **भूटान, अरुणाचल प्रदेश और असम के ट्राई-जंक्शन तक फैली हुई** है।
- यह क्षेत्र भूकंपीय रूप से अत्यंत सक्रिय है और उच्चतम भूकंपीय खतरा क्षेत्र V के अंतर्गत आता है। यह क्षेत्र **संपार्श्विक विवर्तनिक से संबद्ध है जहाँ भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट के नीचे स्थित है।**
- सबडक्शन (Subduction) एक भूवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें एक 'क्रस्टल प्लेट' (Crustal Plate) का किनारा दूसरे के नीचे खसिक जाता है।
- हिमालयन बेल्ट और सुमात्रान बेल्ट के सबडक्शन और टकराव क्षेत्र के बीच दबा हुआ क्षेत्र होने के कारण उत्तर-पूर्व भारत भूकंप की घटनाओं के प्रति अत्यधिक प्रवण है।**
- कोपिली नदी (Kopili river) और उसकी सहायक नदियों के जलोढ़ से भरे एक विवर्तनिक गर्त के रूप में कोपिली फॉल्ट ज़ोन ने अतीत में 1869 के भूकंप (7.8 तीव्रता) और 1943 के भूकंप (7.3 तीव्रता) सहित कई शक्तिशाली भूकंपीय गतिविधियाँ देखी हैं।

लक्षद्वीप (Lakshadweep)

संदर्भ

- भारत की भागीदारी गारंटी प्रणाली (Participatory Guarantee System- PGS) के तहत संपूर्ण लक्षद्वीप को एक [जैविक कृषि क्षेत्र](#) घोषित किया गया है।

लक्षद्वीप के बारे में

- लक्षद्वीप **शत प्रतिशत जैविक क्षेत्र बनने वाला देश का पहला केंद्रशासित प्रदेश** है, जहाँ सभी प्रकार की खेती सथितिक उर्वरकों और कीटनाशकों आदि के उपयोग के बिना की जाती है। **इससे पहले वर्ष 2016 में सिककिम भारत का पहला 100 प्रतिशत जैविक राज्य बना था।**
- यह **अरब सागर में स्थित 36 द्वीपों का एक द्वीपसमूह** है, जो मुख्य भूमिके दक्षिण-पश्चिमी में स्थित है।
- द्वीप के **अमीनीदीव (Aminidivi)** उपसमूह (मुख्य रूप से अमीनी, कलितन, चेतलत, कदमत, बतिरा और पेरूमल पार) और **लककादीव (Laccadive)** उपसमूह (मुख्य रूप से अन्दरोत, कल्पेनी, कवरत्ती, पत्तिती और सुहेली पार) के बीच पत्तिती बैंक के माध्यम से जलमग्न संपर्क है।
- मनिकोय द्वीप (Minicoy Island)**, जो **200 किलोमीटर चौड़े नाइन डग्री चैनल के दक्षिणी छोर पर स्थित एकमात्र प्रवाल-द्वीप** है, के साथ वे अरब सागर में भारत के कोरल द्वीप का निर्माण करते हैं।

पोलावरम सचिाई परियोजना (Polavaram Irrigation Project)

संदर्भ

- [पोलावरम परियोजना](#) आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी पर निर्माणाधीन बहुउद्देश्यीय संचाई परियोजना है।

पोलावरम के बारे में

- पोलावरम आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी ज़िले का एक गाँव है।
- पापी हलिस और पोलावरम परियोजना गाँव की प्रमुख पहचान हैं। इस परियोजना को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय परियोजना का दर्जा दिया गया है।
- यह क्षेत्र मुसुनुरी नायकों के कम्मा राजाओं के शासन में था। कम्मा राजा मुसुनुरी प्रोलैय्या ने सन् 1330 में पोलावरम गाँव को ब्राह्मणों को दान में दिया था। पोलावरम, पोल या प्रोल (राजा) और वरम (दान) के संयुक्त होने से बना है।
- पोलावरम परियोजना अपने वित्तपोषण, प्रभावित लोगों के पुनर्वास और आंध्र प्रदेश के अलावा अन्य राज्यों, जैसे ओडिशा और तेलंगाना के क्षेत्रों पर प्रभाव जैसे विभिन्न संदर्भों में एक विवादास्पद मुद्दा रहा है।

रानेबेन्नुर (Ranebennur)

संदर्भ

- कर्नाटक के रानेबेन्नुर में ऊन प्रसंस्करण के लिये एक [कॉमन सर्विस सेंटर](#) (CSC) स्थापित करने का प्रस्ताव किया गया है।

रानीबेन्नुर के बारे में

- रानीबेन्नुर कर्नाटक के हावेरी ज़िले का एक शहर है। यहाँ एक समृद्ध पण्य बाज़ार (Commodity Market) मौजूद है। यहाँ सूती धागे, बनौला, तलिहन, लाल मरिच, सुपारी और पान जैसी वस्तुओं का कारोबार होता है।
- कर्नाटक की सबसे महत्वपूर्ण नदियों में से एक तुंगभद्रा रानेबेन्नुर तालुक की दक्षिणी सीमा से होकर बहती है।
- एक अन्य नदी कुमाडवती (Kumadvathi), जो मदाघ मसूर झील से निकलती है, रानेबेन्नुर में प्रवेश करती है और फरि तुंगभद्रा नदी में मलि जाती है।
- रानेबेन्नुर कृष्णमृग अभयारण्य, कृष्णमृग (Blackbuck), [ग्रेट इंडियन बसटरड](#) और भेड़िया प्रजातियों का घर है। यहाँ ग्रेट इंडियन बसटरड को अंतिम बार वर्ष 2005 में देखा गया था और संभव है कि वे स्थानीय रूप से विलुप्त हो गए हों।

साबरमती नदी (Sabarmati River)

संदर्भ

- अहमदाबाद नगर नगिम 'साबरमती रिवरफ्रंट' के विकास की दृष्टि में काम कर रहा है।

साबरमती नदी के बारे में

- साबरमती नदी एक मानसून-आधारित नदी है जो अहमदाबाद में उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है और शहर को उसके पश्चिमी और पूर्वी अर्द्ध हिस्सों में विभाजित करती है।
- यह पश्चिमी की ओर बहने वाली प्रमुख नदियों में से एक है जो राजस्थान के उदयपुर ज़िले की अरावली रेंज से निकलती है। यह अरब सागर के खंभात की खाड़ी में गिरती है।
- यह नदी तीन भू-आकृतिक क्षेत्रों से गुजरती है: चट्टानी ऊपरी भूमि, मध्य जलोढ़ मैदान और नचिला मुहाना क्षेत्र।
- धरोई बाँध (Dharoi Dam) इसी नदी पर स्थित है।

सेला सुरंग (Sela Tunnel)

संदर्भ

- सेला सुरंग एक निर्माणाधीन सड़क है जो असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच वर्ष भर संपर्क सुनिश्चित करेगी।

सेला सुरंग के बारे में

- यह 13,700 फीट की ऊँचाई पर सीमा सड़क संगठन (Border Roads Organisation- BRO) द्वारा क्रियान्वित की जा रही है।
- पूरी हो जाने के बाद यह सुरंग तवांग और आगे के सीमांत क्षेत्रों के लिये हर मौसम में संपर्क प्रदान करेगी क्योंकि यह हिमस्खलन प्रवण और

बर्फबारी वाले क्षेत्रों से सुरक्षित होगी।

- यह तेज़पुर से तवांग तक की यात्रा के समय को एक घंटे से अधिक घटा देगी और इस क्षेत्र में पर्यटन और संबंधित आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देगी।
- इसके निर्माण से बामडला और तवांग के बीच 171 किलोमीटर की सड़क हर मौसम में आवागमन के लिये सुलभ रहेगी।

तालचेर (Talcher)

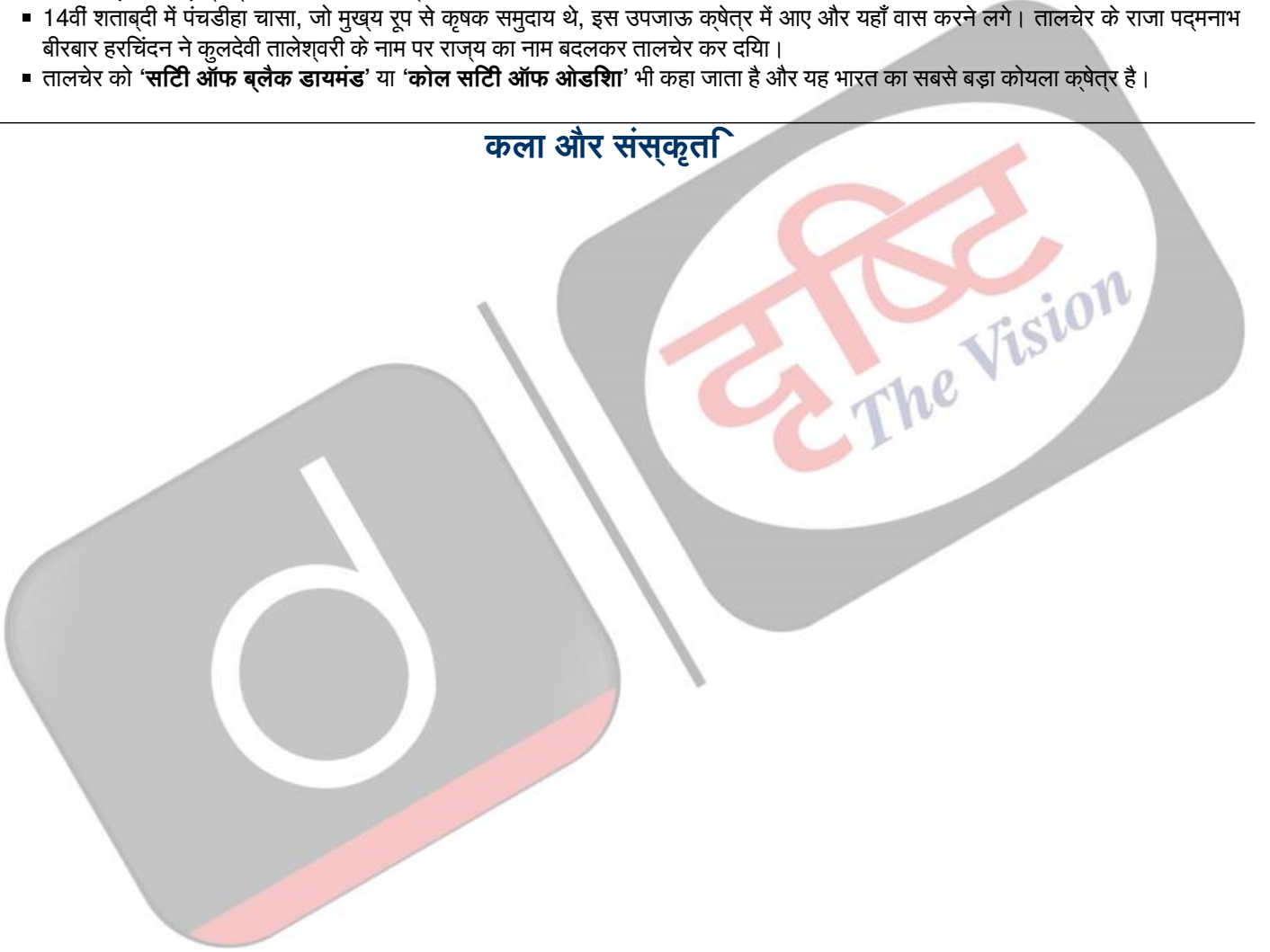
संदर्भ

- भारत का पहला कोयला गैसीकरण आधारित उर्वरक संयंत्र (Coal Gasification-Based Fertiliser Plant) तालचेर/तलचेर/तालचार में स्थापित किया जा रहा है।

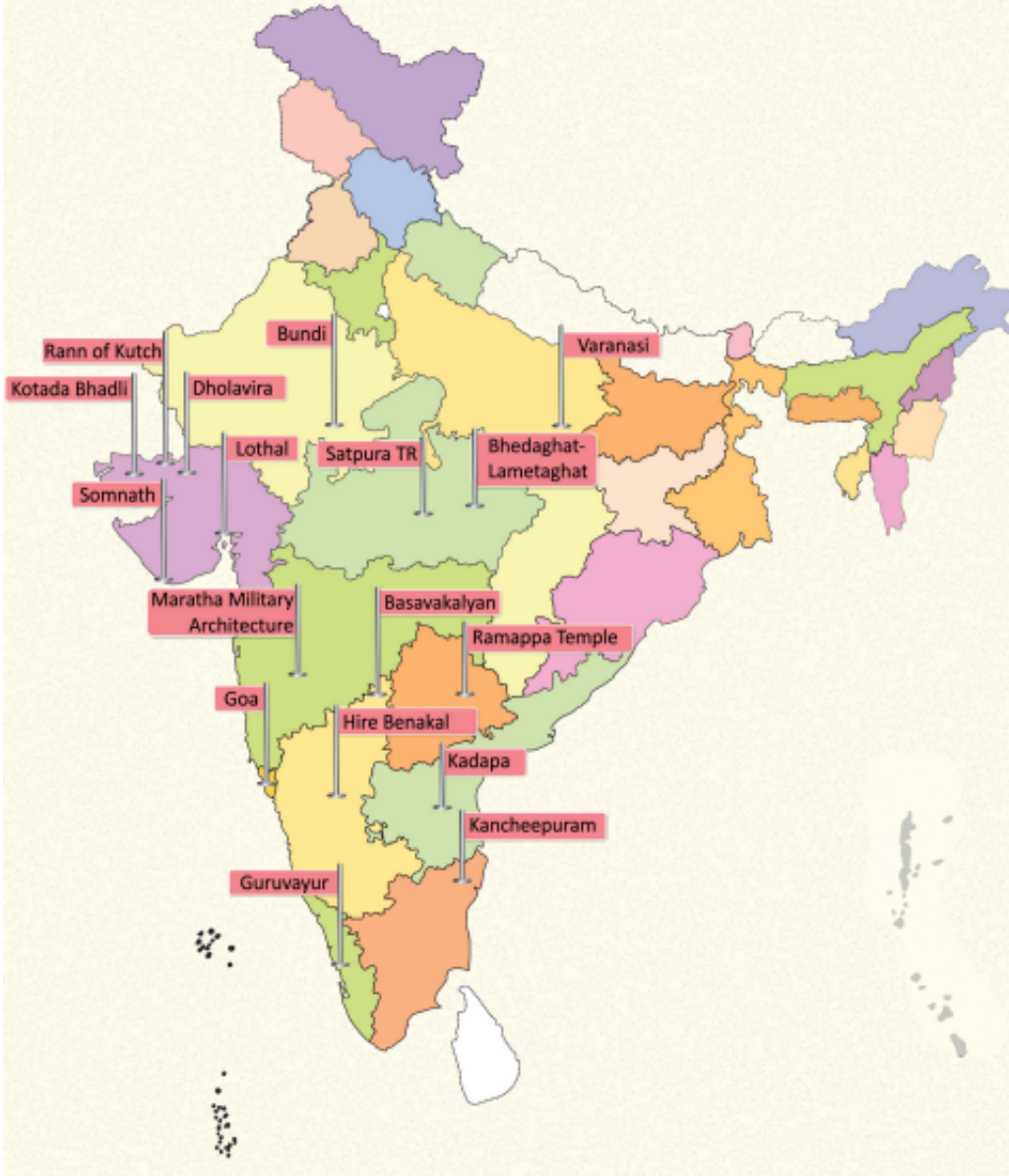
तालचेर के बारे में

- तालचेर (ओडिशा) ब्राह्मणी नदी के तट पर स्थित है।
- 14वीं शताब्दी में पंचडीहा चासा, जो मुख्य रूप से कृषक समुदाय थे, इस उपजाऊ क्षेत्र में आए और यहाँ वास करने लगे। तालचेर के राजा पद्मनाभ बीरबार हरचिंदन ने कुलदेवी तालेश्वरी के नाम पर राज्य का नाम बदलकर तालचेर कर दिया।
- तालचेर को 'सटी ऑफ ब्लैक डायमंड' या 'कोल सटी ऑफ ओडिशा' भी कहा जाता है और यह भारत का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है।

कला और संस्कृति



Art & Culture



छह वरिसत स्थलों को यूनेस्को की अस्थायी सूची में जोड़ा गया

चर्चा में क्यों?

- छह भारतीय स्थानों को यूनेस्को के **वशिव धरोहर स्थलों** (World Heritage Sites- WHS) की अस्थायी सूची (Tentative List) में जोड़ा गया है। यूनेस्को के संचालनात्मक दशा-नरिदेश (Operational Guidelines), 2019 के अनुसार कसि भी स्मारक/स्थल को वशिव वरिसत स्थल (World Heritage Site) की सूची में अंतमि रूप से शामिल करने से पहले उसे एक वर्ष के लयि इसके अस्थायी सूची में रखना अनविर्य है।
- **अस्थायी सूची में शामिल छः नए स्थल हैं:**
 - वाराणसी के घाट (उत्तर प्रदेश)
 - कांचीपुरम के मंदरि (तमलिनाडु)
 - सतपुड़ा टाइगर रज़िरव (मध्य प्रदेश)
 - मराठा सैन्य वास्तुकला (महाराष्ट्र)
 - हायर बेनकल का महापाषाण स्थल (कर्नाटक)
 - नर्मदा घाटी में भेड़ाघाट-लमेताघाट, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

बूंदी की स्थापत्य वरिसत



चर्चा में क्यों?

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा हाल ही में 'देखो अपना देश' शीर्षक से एक वेबिनार शृंखला का आयोजन किया गया, जो राजस्थान के बूंदी ज़िले की स्थापत्य वरिसत पर केंद्रित है।

बूंदी के बारे में

- सुख महल, रानी की बावड़ी, तारागढ़ कला, 84 खंभों वाला सेनोटाफ, गढ़ पैलेस, बादल महल, छत्र महल आदि बूंदी की स्थापत्य वरिसत के कुछ उल्लेखनीय स्थल हैं।
- बूंदी पर कभी हाड़ा चौहान का शासन था। कई इतिहासकारों का दावा है कि यह कभी महान हाड़ौती साम्राज्य की राजधानी थी, जो अपनी कला और मूर्तिकला के लिये प्रसिद्ध था।
 - हाड़ौती क्षेत्र का नाम हाड़ा चौहान के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने कोटा और बूंदी के आसपास इस क्षेत्र पर शासन किया था।
- प्राचीन काल में बूंदी के आसपास का क्षेत्र स्पष्ट रूप से विभिन्न स्थानीय जनजातियों द्वारा बसा हुआ था जिनमें परहार मीणा और भील मीणा प्रमुख थे।
- बाद में इस क्षेत्र पर राव देव का शासन था, जिन्होंने वर्ष 1242 में जैता मीणा से इसे प्राप्त करने के बाद बूंदी पर अधिकार कर लिया और आसपास के क्षेत्र का नाम बदलकर हरवती या हाड़ौती कर दिया।
- अगली दो शताब्दियों तक बूंदी के हाड़ा मेवाड़ के सिसोदिया के जागीरदार रहे और बादशाह अकबर के बाद 1569 तक राव की उपाधि से शासित थे।

धौलावीरा

चर्चा में क्यों?

- हड़प्पा युग के पुरातात्विक स्थल **धौलावीरा** को हाल ही में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। धौलावीरा, इस प्रतिष्ठित सूची में शामिल होने वाला सधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilisation- IVC) का पहला भारतीय स्थल है।

धौलावीरा के बारे में:

- धौलावीरा का प्राचीन शहर हड़प्पा सभ्यता का दक्षिणी केंद्र, गुजरात राज्य में खादरि के शुष्क द्वीप (Arid Island) पर स्थित है।
- 3000-1500 ईसा पूर्व के बीच इस पर कब्जा कर लिया गया, यह इस अवधि की दक्षिण-पूर्व एशिया की अच्छी तरह से संरक्षित शहरी बस्तियों में से एक है, जिसमें एक चारदीवारी युक्त शहर (Fortified City) और एक कब्रस्तान शामिल है।
- जबकि धौलावीरा, सूची में शामिल गुजरात की चौथी और भारत की 40वीं साइट बन गई है। यह भारत में प्राचीन सधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilisation- IVC) की पहली साइट है जिसे टैग मिला है।
 - गुजरात में इससे पहले तीन विश्व धरोहर स्थल थे- पावागढ़ के पास चंपानेर, पाटन में रानी की वाव और ऐतिहासिक शहर अहमदाबाद।

गोवा

चर्चा में क्यों?

- मराठा राजा छत्रपति शिवाजी (Chhatrapati Shivaji) के राज्याभिषेक दिवस (6 जून) की वर्षगांठ के अवसर पर **गोवा** सरकार ने एक लघु फिल्म जारी की है जिसमें गोवा के इतिहास और पुरतगालियों से लड़ने में शिवाजी की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।
- गोवा के बारे में**
 - गोवा, भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर कोंकण के रूप में जाना जाने वाले क्षेत्र में स्थित है और भौगोलिक रूप से दक्कन उच्च भूमि से पश्चिमी घाट द्वारा अलग होता है।
 - यह क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे छोटा राज्य है और सभी भारतीय राज्यों में इसकी प्रतिव्यक्ति GDP सबसे अधिक है।
 - यहाँ की प्रमुख नदियों में जुआरी, मांडवी, तेरेखोल, चपोरा, गलगबाग आदि शामिल हैं।
 - गोवा, दमन और दीव आधिकारिक अधिनियम, 1987 देवनागरी लिपि में कोंकणी को गोवा की एकमात्र आधिकारिक भाषा बनाता है, लेकिन यह प्रावधान करता है कि मराठी का उपयोग 'सभी या किसी भी आधिकारिक उद्देश्यों' के लिये भी किया जा सकता है।

गुरुवायुर, केरल

चर्चा में क्यों?

- पर्यटन मंत्रालय की **प्रसाद योजना** (PRASAD Scheme) के अंतर्गत 'केरल के गुरुवायुर विकास' परियोजना के तहत एक **पर्यटक सुविधा केंद्र** का निर्माण किया गया था।

गुरुवायुर के बारे में

- यह स्थान भगवान वशिष्ठ के एक रूप भगवान गुरुवायूरप्पन को समर्पित **गुरुवायुर मंदिर** के लिये प्रसिद्ध है। मंदिर को गुरुवायुर श्री कृष्ण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।
- मंदिर के प्रसिद्ध त्योहार- गुरुवायुर एकादशी, चेम्बई संगीतहोल्सवम आदि हैं।
- मंदिर के उत्तर की ओर स्थित मंदिर टैंक (तालाब) को रुदरतीर्थम कहा जाता है।
- 14वीं शताब्दी के तमिल साहित्य 'कोकासंदेसम (Kokasandesam)' में गुरुवायुर नामक स्थान का उल्लेख मिलता है।

कडप्पा, आंध्र प्रदेश

संदर्भ

- आंध्र प्रदेश के कडप्पा (Kadapa) ज़िले में खुदाई के दौरान **रेनाटी चोल** युग (Renati Chola Era) के एक दुर्लभ शिलालेख (Rare Inscription) की प्राप्ति हुई है।

कडप्पा के बारे में

- यह शहर तीन तरफ से नल्लामाला और पालकोंडा पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- कडप्पा अपने इतिहास में विभिन्न शासकों के अधीन रहा है, जिसमें नजिम, **चोल**, वजियनगर साम्राज्य और मैसूर साम्राज्य शामिल हैं।
- खोजा गया शिलालेख पुरातन तेलुगू में लिखा गया था। शक्तिवाद बताते हैं कि यह शिलालेख सदियामायु (Sidyamayyu) नामक एक व्यक्ति को उपहार में दी गई छह मार्टटस [Marttus- एक प्रकार की भूमिमाने की इकाई] भूमि के रिकॉर्ड से संबंधित है। सदियामायु (Sidyamayyu), पडुक्कुला गाँव में मंदिर की सेवा करने वाले ब्राह्मणों में से एक था।

काकतीय रुदरेश्वर मंदिर

चर्चा में क्यों?

- तेलंगाना में **काकतीय रुदरेश्वर मंदिर**, जिसे रामप्पा मंदिर भी कहा जाता है, को हाल ही में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया गया है।

रामप्पा मंदिर के बारे में

- 40 वर्षों तक मंदिर निर्माण करने वाले एक मूर्तकार के नाम पर इसे रामप्पा मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। इसका निर्माण 1213 ईस्वी में **काकतीय राजवंश** (Kakatiya Dynasty) के शासन काल में कराया गया था।
- मंदिर का निर्माण काकतीय राजवंश के शासन काल में काकतीय राजा गणपति देव के एक सेनापति रैचारला रुद्र ने कराया था।
- विश्व धरोहर स्थल की सूची में जगह बनाने वाला यह आंध्र प्रदेश और तेलंगाना का पहला और एकमात्र स्मारक है।
- मंदिर को जो चीज़ वास्तव में अलग करती है, वह है इसकी 'हल्की ईंटें' जिनका उपयोग मंदिर की 'शकारा' छत के निर्माण के लिये किया गया था।
 - ईंटें इतनी हल्की हैं कि वे पानी पर तैर सकती हैं।
 - ईंट का घनत्व 0.85 से 0.9 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर के बीच है, जबकि पानी का घनत्व 1 ग्राम/सीसी होता है।
 - किसी भी सामान्य ईंट का घनत्व लगभग 2.2 g/cc होता है।

कोटडा भादली

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में मट्टी के बर्तनों पर आधारित एक अध्ययन से पता चला है कि हड़प्पा नविसियों द्वारा डेयरी उत्पादों का प्रयोग किया जाता था।

खोज के बारे में

- कोटडा भादली लगभग 3.11 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला एक छोटा सा गाँव है और यह दो नदियों के संगम पर स्थित है।
- इस अध्ययन का परिणाम कोटडा भादली (गुजरात) के एक पुरातात्विक स्थल पर पाए गए बर्तनों के टुकड़ों से प्राप्त भोज्य पदार्थों के अणुओं (जैसे- वसा और प्रोटीन) के आणविक रासायनिक विश्लेषण पर आधारित है।
- इस खोज से यह रहस्योद्घाटन होता है कि इस उपमहाद्वीप में पनीर बनाया और उपयोग किया जाता था, इसे परपिक्व हड़प्पा काल के रूप में जाना जाता है।
 - यह पनीर बनाने का इस क्षेत्र में सबसे प्रथम साक्ष्य होगा।

- वर्ष 2018 के एक अध्ययन में 5200 ईसा पूर्व में भूमध्य सागर में डेयरी प्रसंस्करण की प्रथा को स्थापित करने के लिये क्रोएशिया के डालमेटियन तट से मटिटी के बरतनों में लपिडि अवशेषों की कार्बन डेटिंग का प्रयोग किया गया।

लोथल

चर्चा में क्यों?

- भारत की समुद्री वरिषत और इतहास को प्रदर्शित करने के लिये गुजरात के लोथल क्षेत्र में एक [राष्ट्रीय समुद्री वरिषत परसिर](#) (NMHC) वकसित किया जाएगा। NMHC में राष्ट्रीय समुद्री वरिषत संग्रहालय, हेरटिज थीम पार्क और लाइटहाउस संग्रहालय जैसी वभिन्न अनूठी संरचनाएँ शामिल होंगी।

लोथल के बारे में

- लोथल गुजरात में स्थित प्राचीन सधु घाटी सभ्यता के सबसे दक्षिणी शहरों में से एक था। इसकी खोज 1955-1960 के दौरान एस.आर. राव ने की थी।
- [भारतीय प्रातत्त्व सरवेक्षण](#) (ASI) के अनुसार, लोथल में दुनिया का सबसे पुराना ज्ञात डॉक था, जो लोथल शहर को सधु के हड़प्पा शहरों और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच व्यापार मार्ग पर साबरमती नदी के एक प्राचीन मार्ग से जोड़ता था।
- प्राचीन काल में लोथल एक महत्त्वपूर्ण एवं संपन्न व्यापार केंद्र था, जिसके मोतियों, रत्नों और बहुमूल्य गहनों का व्यापार पश्चिम एशिया और अफ्रीका के सुदूर क्षेत्रों तक वसितृत था।
- मृतकों को दफनाने का सबसे अनूठा तरीका लोथल में पाया गया जैसे- जुड़वाँ दफन, यानी दो व्यक्तियों को एक साथ दफनाना।

बसवकल्याण में न्यू अनुभव मंडप

चर्चा में क्यों?

- बसवकल्याण में '[न्यू अनुभव मंडप](#)' की आधारशिला रखी गई। इसका नरिमाण वास्तुकला की कल्याण चालुक्य शैली में किया जाएगा।

बसवकल्याण के बारे में

- बसवकल्याण पर पश्चिमी चालुक्य, कल्याणी के कलचुरी, देवगरिके यादव, काकतीय, दिल्ली सल्तनत, बहमनी सल्तनत (बीदर, गुलबर्गा), बीदर सल्तनत, बीजापुर सल्तनत, मुगल और हैदराबाद के नजाम का शासन था।
- यह 1050 से 1195 तक पश्चिमी चालुक्य (कल्याणी चालुक्य) राजवंश की शाही राजधानी थी। सोमेश्वर प्रथम (1041-1068) ने कल्याण को अपनी राजधानी बनाया, जिसे बादामी चालुक्यों से अलग करने के लिये कल्याणी चालुक्य के रूप में मान्यता दी गई।
- कल्याणी के कलचुरी कल्याणी चालुक्यों के उत्तराधिकारी बने और कल्याणी को अपनी राजधानी के रूप में बनाए रखा।
- 12वीं शताब्दी के दौरान कल्याणी राजा बज्जला (1156-1167) के कलचुरियों ने सहिसन ग्रहण किया और बसवेश्वर को उनके महामात्य के रूप में नियुक्त किया गया।
- बसवकल्याण कल्लि का नरिमाण चालुक्यों ने करवाया था।

कच्छ का रण

चर्चा में क्यों?

- पर्यटन मंत्रालय ने वर्ष 2020 में गुजरात के [कच्छ के रण](#) में गंतव्य प्रबंधन और सामुदायिक भागीदारी पर एक सम्मेलन का आयोजन किया।

कच्छ के रण के बारे में

- कच्छ का रण 'साल्ट मार्शेस' (Salt Marshes) या रेह भूमिका एक बड़ा क्षेत्र है जो भारत एवं पाकसितान की सीमा पर फैला हुआ है, यह अधिकतर गुजरात में स्थित है।
- राजस्थान और गुजरात से निकलने वाली कई नदियाँ कच्छ के रण में बहती हैं, जिनमें लूनी, भुकी, भरूद, नारा, खरोद, बनास, सरस्वती, रूपेन, बंभान और माचू शामिल हैं।
- कोरी खाड़ी (Kori Creek) और सर खाड़ी (Sir Creek) ज्वार की खाड़ियाँ हैं जो ग्रेट रण (Great Rann) के पश्चिमी छोर पर स्थित सधु नदी डेल्टा का हिस्सा हैं।
 - एक ज्वारीय संकरी खाड़ी छोटे जलमार्ग को संदर्भित करती है जिसमें मशिरति जल (लवणीय और स्वच्छ) होता है। यह एक धारा का हिस्सा है जो समुद्र के ज्वार से प्रभावित होती है। कम ज्वार के दौरान खाड़ी सूख सकती है और एक चैनल बन सकता है। दूसरी ओर, उच्च ज्वार के दौरान उनमें बड़ी मात्रा में जल होता है।
- मटिटी के बेलनाकार भुंगों (झोपड़ियों) के साथ जनजातीय बस्तियाँ कच्छ कढ़ाई, टाई और डाई, चमड़े का काम, मटिटी के बरतनों, बेल धातु शिल्प एवं

प्रसिद्ध रोगन पेंटिंग के लिये उपरकिंदर हैं।

- कच्छ का रण भारत-मलय क्षेत्र (Indo-Malayan Region) का एकमात्र बड़ा बाढ़कृत घास का मैदान है।
- भारत में सबसे बड़ा IVC साइट धौलावीरा का IVC शहर कच्छ के रण में स्थित है। यह शहर कर्क रेखा पर बनाया गया था जो संभवतः यह दर्शाता है कि धौलावीरा के निवासी खगोल विज्ञान में कुशल थे।
- कच्छ के रण में खरिसारा (Khirasara) का औद्योगिक स्थल भी था, जहाँ एक गोदाम भी मिला था।

सोमनाथ, गुजरात

चर्चा में क्यों?

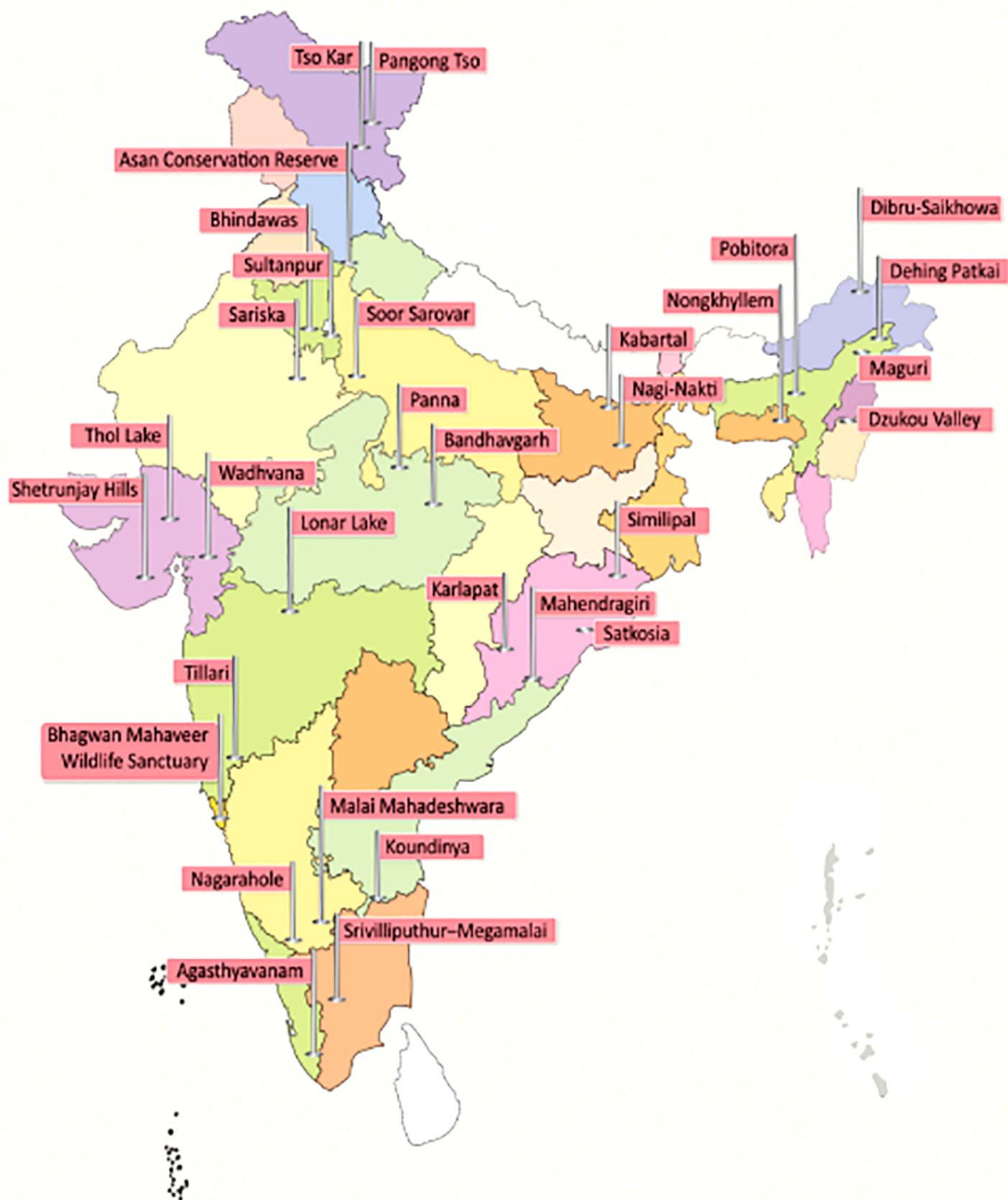
- हाल ही में गुजरात के सोमनाथ में तीर्थयात्रा सुविधाओं के विकास से संबंधित परियोजना का उद्घाटन किया गया।

सोमनाथ के बारे में

- सोमनाथ (जलि का नाम गरि सोमनाथ) जो कि सोमनाथ मंदिर के लिये प्रसिद्ध है, यह भारत के बारह ज्योतिरलिंगों में भगवान शिव का पहला ज्योतिरलिंग है और गरि अभयारण्य एशियाई शेरों का एकमात्र निवास स्थान है।
- गरि अपने केसर आम, सिद्धी के लोक नृत्य "धमाल" और गरि राष्ट्रीय उद्यान तथा अभयारण्य के लिये प्रसिद्ध है।
 - सिद्धी लोग, जो मूल रूप से अफ्रीका के हैं, जंबूर गाँव में रहते हैं, जिसे भारत का मनी अफ्रीका भी कहा जाता है।
- जे गॉर्डन मेल्टन द्वारा प्रलेखित लोकप्रिय परंपरा के अनुसार, माना जाता है कि सोमनाथ में पहला शिव मंदिर अतीत में किसी अज्ञात समय पर बनाया गया था।
- कहा जाता है कि दूसरा मंदिर 649 ईस्वी के आसपास वल्लभी के यादव राजाओं द्वारा उसी स्थान पर बनाया गया था। कहा जाता है कि 725 CE में सधि के अरब गवर्नर अल-जुनैद ने गुजरात और राजस्थान के अपने आक्रमणों के हिस्से के रूप में दूसरे मंदिर को नष्ट कर दिया था।
- कहा जाता है कि गुर्जर-प्रतहार राजा नागभट्ट द्वितीय ने 815 CE में तीसरे मंदिर का निर्माण किया था, जो लाल बलुआ पत्थर की एक बड़ी संरचना थी।
- वर्ष 1024 में भीम प्रथम के शासन काल के दौरान गजनी के प्रमुख तुर्क मुस्लिम शासक महमूद ने गुजरात पर हमला किया और सोमनाथ मंदिर को लूट लिया तथा उसके ज्योतिरलिंग को तोड़ दिया।
- गुजरात में 1299 आक्रमण के दौरान उलुग खान के नेतृत्व में अलाउद्दीन खलिजी की सेना ने वाघेला राजा कर्ण को हराया और सोमनाथ सहित कई शहरों को लूट लिया।
- इसका पुनर्निर्माण मंदिर वास्तुकला की चालुक्य शैली में किया गया है और 1951 में इसके पुनर्निर्माण का कार्य पूरा हुआ था।

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

Environment and Ecology



अगस्त्यवनम जैविक उद्यान (Agasthyavanam Biological Park)

संदर्भ

केरल वन एवं वन्यजीव विभाग (Kerala Forest and Wildlife Department) द्वारा हाल ही में शुरू की गई 'वनकि' नामक पहल ने अगस्त्यवनम जैविक उद्यान में नविकास करने वाले आदवासियों को अपनी कृषि और वन उपज को ऑनलाइन बिक्री करने में सक्षम बनाया है।

प्रमुख बंदि

- वर्ष 1997 में स्थापित अगस्त्यवनम जैविक उद्यान केरल के त्रिवनंतपुरम के पास अवस्थित एक वन्यजीव अभयारण्य है।
- उद्यान का नाम अपनी सुंदरता से मंत्रमुग्ध कर देने वाले अगस्त्यमलाई अगस्त्यकूडम शिखर (Agasthyamalai Agasthyakoodam Peak) के नाम पर रखा गया है जिसे यहाँ से देखा जा सकता है।
- यह उद्यान नेय्यर और पेपारा वन्यजीव अभयारण्यों से लगा हुआ है। यह अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिज़र्व के एक वृहत संरक्षित क्षेत्र के एक हिस्से का भी निर्माण करता है।

बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व (Bandhavgarh Tiger Reserve)

संदर्भ

कसी टाइगर रिज़र्व में भारत की पहली हॉट एयर बैलून वाइल्डलाइफ सफ़ारी (Hot Air Balloon Wildlife Safari) हाल ही में बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व में शुरू की गई।

प्रमुख बंदि

- बांधवगढ़ टाइगर रिज़र्व मध्य प्रदेश के उमरिया और कटनी जिलों की पूर्वी सतपुड़ा पहाड़ी शृंखला में स्थित है। इस संरक्षित क्षेत्र का उल्लेख नारद पंच रत्न तथा शिवि संहिता पुराण में भी मिलता है।
- इसे वर्ष 1968 में राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया था और वर्ष 1993 में इसे एक टाइगर रिज़र्व घोषित किया गया। यह मध्य प्रदेश में वधिय पहाड़ियों पर फैला हुआ है जहाँ खड़ी ढाल, ऊँची-नीची भूमि एवं वन से लेकर खुले घास के मैदान तक विभिन्न स्थालाकृतियाँ पाई जाती हैं।
- बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में ऊँचे घास के मैदानों से लेकर घने जंगल तक मशरूति वनस्पति-जगत व्याप्त है और इसलिये यह विभिन्न प्रकार के जंतुओं व पक्षियों के लिये एक आदर्श पर्यावास का निर्माण करता है।

भगवान महावीर वन्यजीव अभयारण्य (Bhagwan Mahaveer Wildlife Sanctuary)

संदर्भ

गंभीर पर्यावरणीय चिंताएँ जताते हुए सर्वोच्च न्यायालय की केंद्रीय अधिकारिता समिति (Central Empowerment Committee of the Supreme Court) ने भगवान महावीर वन्यजीव अभयारण्य और मोल्लेम राष्ट्रीय उद्यान से गुजरने वाली गोवा रेल परियोजना (Goa Rail Projects) को लाल झंडी दिखा दी है।

प्रमुख बंदि

- पश्चिमी घाट की तलहटी पर स्थित भगवान महावीर वन्यजीव अभयारण्य (BMWS) गोवा के चार संरक्षित वन्यजीव क्षेत्रों में सबसे बड़ा है और इसके अंदर ही मोल्लेम राष्ट्रीय उद्यान (MNP) शामिल है।
- प्रसिद्ध दूधसागर जलप्रपात (Dudhsagar Waterfall) और डेविल्स कैन्यन (Devil's Canyon) यहीं मौजूद हैं।
- वनों के प्रकार:** यहाँ पश्चिमी तट उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, पश्चिमी तट अर्द्ध-सदाबहार वन और नम पर्णपाती वन पाए जाते हैं।
- जंतु प्रजाति:** हरिण, सांभर, चित्तीदार हरिण, जंगली सूअर, माउस डियर एवं बार्कगि डियर, बाघ, लेपर्ड कैट, पैथर, छोटे भारतीय सवित, जंगली कुत्ता, लकड़बग्घा, स्लॉथ बेयर, सयार, बोनट मकाक, स्लेंडर लोरसि, स्केली एंटीलोर, वशाल गलिहरी, उड़ने वाली गलिहरी आदि।
- पादप प्रजाति:** यहाँ पाई जाने वाली प्रमुख वृक्ष प्रजातियों में टर्मिनलिया (Terminalia), जरुल (Lagerstroemia/Crepe Myrtle), जामबु (Xylia) और शीशम (Dalbergia/Timber Trees) शामिल हैं।

देहगि पटकाई वन्यजीव अभयारण्य (Dehing Patkai Wildlife Sanctuary)

संदर्भ

हाल ही में असम सरकार ने देहगि पटकाई वन्यजीव अभयारण्य को राष्ट्रीय उद्यान (National Park) के रूप में अपग्रेड किया।

अभयारण्य के बारे में

- इस उन्नयन के बाद देहगि पटकाई असम का सातवाँ राष्ट्रीय उद्यान बन गया है। इससे पूर्व रायमोना रज़िर्व फॉरेस्ट को छोटे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अपग्रेड किया गया था। असम में पहले से मौजूद पाँच राष्ट्रीय उद्यान हैं- काजीरंगा, नामेरी, मानस, ओरंग और डब्रू-सैखोवा।
- देहगि पटकाई को वर्ष 2004 में एक वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था और यहाँ पादपों एवं जीवों की विविध प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- यह वृहत क्षेत्र में वसित देहगि पटकाई एलीफेंट रज़िर्व के अंदर स्थित है, जो ऊपरी असम (डब्रूगढ़, तनिसुकिया तथा शविसागर) के कोयला और तेल-समृद्ध ज़िलों में फैला हुआ है और माना जाता है कि यह असम में तराई के वर्षावन क्षेत्र का अंतिम शेष सन्निहित पैच है।
- **जंतु प्रजाति:** इस क्षेत्र में पाए जाने वाले दुर्लभ जीवों में चीनी पैंगोलिन, फ्लाईंग फॉक्स, जंगली सूअर, सांभर, बार्कगि डयिर, गौर, सीरो और मलय विशाल गलिहरी शामिल हैं।
 - यह भारत का एकमात्र अभयारण्य है जहाँ जंगली बिल्ली प्रजातियों की सात अलग-अलग प्रजातियों का घर है- बाघ, तेंदुआ, क्लाउडेड लेपर्ड, लेपर्ड कैट, गोल्डन कैट, जंगल कैट और मार्बलड कैट।
 - यहाँ संकटग्रस्त (Endangered) व्हाइट वुड डक (White Winged Wood Duck) की घनतम आबादी पाई जाती है।
- **पादप प्रजाति:** देहगि पटकाई एक पर्णपाती वर्षावन है जो अर्द्ध-सदाबहार एवं हरे-भरे वनस्पतियों से घिरा हुआ है।

डब्रू-सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान (Dibru-Saikhowa National Park)

संदर्भ

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा डब्रू-सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान के अंदर सात कुएँ खोदने के निर्णय पर चर्चा प्रकट की गई है।

प्रमुख बंदि

- डब्रू-सैखोवा एक राष्ट्रीय उद्यान के साथ-साथ बायोस्फीयर रज़िर्व भी है जो असम के सुदूर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है।
- यह उत्तर में लोहित एवं ब्रह्मपुत्र नदियों और दक्षिणी में डब्रू नदी से घिरा है।
- **वन:** अर्द्ध-सदाबहार वन, पर्णपाती वन, तटीय एवं अनूप वन और आर्द्र सदाबहार वनों के अलग-अलग खंड।
- उत्तर-पूर्व भारत का सबसे बड़ा सैलक्स अनूप वन (Salix swamp forest) इसी रज़िर्व के अंदर स्थित है।
- **जंतु प्रजाति:** बाघ, हाथी, तेंदुआ, छोटे भारतीय सवित, गंगा डॉल्फिन, स्लो लोरसि आदि।
- इसे एक महत्त्वपूर्ण पक्षी और जैव विविधता क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया जाता है।

जुकू घाटी (Dzukou Valley)

संदर्भ

मणपुर-नगालैंड सीमा पर स्थित जुकू घाटी वनाग्नि (Wildfire) की चपेट में आ गई थी।

जुकू घाटी के बारे में

- जुकू घाटी नगालैंड और मणपुर की सीमा पर स्थित है। जापफू शखिर (Japfu Peak) के ठीक पीछे स्थित यह घाटी उत्तर-पूर्व के सबसे लोकप्रिय ट्रेकिंग स्पॉट (Trekking Spots) में से एक है।
- जुकू घाटी और जापफू शखिर नगालैंड के पुलीबडजे वन्यजीव अभयारण्य (Pulie Badze Wildlife Sanctuary) के निकट स्थित है।
- जुकू घाटी हर मौसम में विभिन्न प्रकार के फूलों के लिये भी प्रसिद्ध है और इसे 'फूलों की घाटी' भी कहा जाता है। यह अंगामी जनजातिका निवास स्थान भी है।
- **जंतु प्रजाति:** यह बेलीथ ट्रगोपन (Blyth's Tragopan) का आवास क्षेत्र है, जो नगालैंड का राज्य पक्षी है। यहाँ एशियाई सुनहरी बिल्ली, हूलाक गबिन, हॉर्नेड टॉड, कैप्ट लंगूर, स्टंप-टेलड मैकाक और सीरो भी पाए जाते हैं।
- **पादप प्रजाति:** यहाँ हर मौसम में ही विभिन्न प्रकार के फूल खिले रहते हैं, लेकिन इनमें जुकू लिली सबसे प्रसिद्ध है जो केवल इस घाटी में पाई जाती है। इसके अलावा, यहाँ कई रोडोडेंड्रोन प्रजातियाँ और एकोनिता नगरम (Aconita Nagaram) जैसे पौधे पाए जाते हैं।

करलापट वन्यजीव अभयारण्य (Karlapat Wildlife Sanctuary)

संदर्भ

हाल ही में करलापट वन्यजीव अभयारण्य में हेमरजि सेप्टीसीमिया (Haemorrhagic Septicaemia) के कारण छह हाथियों की मौत हो गई।

प्रमुख बंदि

- यह ओडिशा के कालाहांडी ज़िले में स्थित है।
- **वनस्पति:** शुष्क पर्णपाती वन।
- **जंतु प्रजाति:** तेंदुआ, गौर, सांभर, नीलगाय, बार्कगि डयिर, माउस डयिर, सॉफ्ट क्लॉ ओटावा, आदि।
- **पादप प्रजाति:** साल, बीजा, बाँस, औषधीय पौधे आदि।
- फुलीझरण जलप्रपात अभयारण्य के भीतर स्थित है।

कौंडिन्य वन्यजीव अभयारण्य (Koundinya Wildlife Sanctuary)

संदर्भ

कौंडिन्य वन्यजीव अभयारण्य तथा तमलिनाडु के सीमा से लगे जंगलों से जंगली हाथियों का झुंड बाहर निकल आता है जो लोगों और वन अधिकारियों के लिये चिंता का विषय बनता है।

प्रमुख बटु

- कौंडिन्य आंध्र प्रदेश के चित्तूर ज़िले के पालमनेर-कुपम वन शृंखला में स्थित है। यह अभयारण्य आंध्र प्रदेश राज्य में एशियाई हाथियों का एकमात्र आवास स्थान है।
- यह अभयारण्य **हाथी परियोजना** के अंतर्गत आता है जो भारत सरकार द्वारा परिचालित एक देशव्यापी **हाथी संरक्षण परियोजना** है।
- इस अभयारण्य में कटीली झाड़ियों के साथ शुष्क पर्णपाती वन (Dry Deciduous Forests) पाए जाते हैं।
- अभयारण्य एक ऐसे क्षेत्र में स्थित है जहाँ कोलार पठार समाप्त होता है और कई घाटियों एवं घाटों का निर्माण करता हुआ तमलिनाडु के मैदानी इलाकों में उतर जाता है।
- **जंतु प्रजाति:** इस अभयारण्य में असुरक्षित (Vulnerable- VU) पीले गले वाली बुलबुल (Yellow-Throated Bulbul) पाई जाती है।
- अभयारण्य में पाए जाने वाले कुछ अन्य जीवों में स्लॉथ बयिर, तेंदुआ, चीतल, चौसधिया, सांभर, साही, जंगली सूअर, जंगली बलिली, सयार, जंगली मुरगी, तारांकति कछुआ और स्लेंडर लोरसि शामिल हैं।
- **पादप प्रजाति:** यहाँ पाए जाने वाले पादप प्रजातियों में अलबजिया अमारा (Albizia amara) अकेसिया (Acacia), लगेरस्ट्रोमिया (Lagerstroemia), फिकस (Ficus), बाँस और संतालम एल्बम (Santalum album) शामिल हैं।

मगुरी बील (Maguri Beel)

संदर्भ

हाल ही में लगभग एक सदी बाद मगुरी-मोटापुंग बील (Maguri-Motapung Beel) में मंदारनि बतख (Mandarin Ducks) देखी गई।

प्रमुख बटु

- 'मगुरी' वॉकगि कैटफिश (Walking Catfish) के लिये प्रयुक्त स्थानीय शब्द है। मगुरी बील असम के तनिसुकिया ज़िले में डबिरू-सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान के पास स्थित एक आर्द्रभूमि और झील है।
- यह डबिरू नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है और एक छोटे से चैनल के माध्यम से डबिरू नदी से जुड़ती है और अंत में ब्रह्मपुत्र नदी से मिल जाती है।
- मई 2020 में 'ऑयल इंडिया लिमिटेड' के स्वामित्व वाले गैस कुएँ में वसिफोट और आग के कारण इस बील पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। इस कारण हुए तेल के फैलाव से मछलियों, साँपों के साथ-साथ लुप्तप्राय गंगा डॉल्फिन के मारे जाने के मामले सामने आए थे।

महेंद्रगरि पहाड़ी (Mahendragiri Hill)

संदर्भ

ओडिशा सरकार ने समृद्ध जैव विविधता वाले महेंद्रगरि पहाड़ी पारितंत्र के दक्षिणी भाग में राज्य के दूसरे बायोस्फीयर रज़िर्व की स्थापना का प्रस्ताव किया है।

प्रमुख बटु

- प्रस्तावित महेंद्रगरि बायोस्फीयर रज़िर्व पूर्वी घाट में गजपति और गंजाम ज़िलों में वसित होगा।
- अधिसूचित होने पर यह ओडिशा का दूसरा बायोस्फीयर रज़िर्व बन जाएगा। 5,569 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में वसित समिलीपाल बायोस्फीयर रज़िर्व ओडिशा का पहला ऐसा रज़िर्व था जिसे 20 मई, 1996 को अधिसूचित किया गया था।
- महेंद्रगरि (1,501 मीटर ऊँचाई) ओडिशा में पूर्वी घाट में स्थित पहाड़ी है। यह पूर्वी घाट के उच्चतम बटुओं में से एक है।
- महेंद्रगरि में सौरा/सावरा (Soura) लोगों का निवास है जो एक 'वर्षीय रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह' (Particularly Vulnerable Tribal Group- PVTG) है।

मलाई महादेश्वर हलिस् वन्यजीव अभयारण्य (Malai Mahadeshwara Hills Wildlife Sanctuary)

संदर्भ

मलाई महादेश्वर हलिस् वन्यजीव अभयारण्य को एक टाइगर रज़िर्व बनाने का प्रस्ताव किया गया है। अधिसूचि होने के बाद यह कर्नाटक का छठा टाइगर रज़िर्व बन जाएगा।

प्रमुख बडि

- लगभग 670 वर्ग किलोमीटर मुख्य क्षेत्र के साथ प्रस्तावित यह टाइगर रज़िर्व मलाई महादेश्वर रज़िर्व फॉरेस्ट, हनूर रज़िर्व फॉरेस्ट (Hanur Reserve Forest) और येदियाराहल्ली रज़िर्व फॉरेस्ट (Yedyarahalli Reserve Forest) में वसित होगा। प्रस्तावित टाइगर रज़िर्व अधिसूचि मैसूर एलीफेंट रज़िर्व का भी हिस्सा होगा।
- मलाई महादेश्वर हलिस् वन्यजीव अभयारण्य एक ओर बलिगिरि रंगनाथस्वामी मंदिर टाइगर रज़िर्व (Biligiri Ranganathaswamy Temple Tiger Reserve) और दूसरी ओर तमलिनाडु के सत्यमंगलम टाइगर रज़िर्व (Sathyamangalam Tiger Reserve) से लगा हुआ है।
- कावेरी वन्यजीव अभयारण्य भी इसकी सीमा से लगा है, इस प्रकार यहाँ 3,500 वर्ग किलोमीटर से अधिक का एक सन्नहित वन आवरण तैयार होता है जो बाघों की अधिशेष आबादी को संभालने और उनकी संख्या बढ़ाने में मदद कर सकता है।
- यहाँ गौर, सांभर, चीतल, चौसगि मृग, जंगली सूअर आदि प्रजातियों की बहुतायत है। यहाँ नकिट संकटग्रस्त (Near Threatened- NT) का IUCN दर्जा रखने वाली वशालकाय सफ़ेद-भूरे बालों वाली गलिहरी (grizzled giant squirrel) भी पाई जाती है। वर्ष 2014 के एक सर्वेक्षण के अनुसार इस भूदृश्य में लगभग 285 पक्षी प्रजातियों को भी दर्ज किया गया है।

नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान (Nagarhole National Park)

संदर्भ

- कर्नाटक वन विभाग मोटर चालकों द्वारा वन कानूनों का बेहतर अनुपालन सुनिश्चित करने और सड़क हादसों को कम करने के लिये नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान के आसपास की सड़कों के लिये एक यातायात नगिरानी तंत्र स्थापित करने की योजना पर कार्य कर रहा है।

प्रमुख बडि

- नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान को राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यान के नाम से भी जाना जाता है। यह कर्नाटक के कोडागु और मैसूर ज़िलों में स्थित है।
- बांदीपुर, मुदुमलाई और वायनाड वन्यजीव अभयारण्य इस अभयारण्य के नकिट स्थित हैं।
- नागरहोल नदी इस उद्यान से होकर बहती है और धीरे-धीरे काबिनी नदी में मिल जाती है जो नागरहोल और बांदीपुर के बीच की सीमा का भी निर्माण करती है।
- जंतु प्रजाति: चीतल (चित्तीदार हरिण), भारतीय माउस डयिर, गौर, धारीदार गर्दन वाले सुरख नेवले (Stripe-Necked and Ruddy Mongooses), ग्रे लंगूर, बोनट मकाक, एशियाई जंगली कुत्ते, तेंदुआ, बाघ आदि।

नागी-नकटी पक्षी अभयारण्य (Nagi-Nakti Bird Sanctuaries)

संदर्भ

हाल ही में बिहार के जमुई ज़िले के नागी-नकटी पक्षी अभयारण्य में राज्य के पहले राज्यस्तरीय पक्षी उत्सव 'कलरव' का आयोजन किया गया था।

प्रमुख बडि

- नागी बाँध (Nagi Dam) और नकटी बाँध (Nakti Dam) दो अभयारण्य हैं जो एक दूसरे के इतने नकिट हैं कि उन्हें प्रायः एक पक्षी क्षेत्र के रूप में देखा जाता है।
- नागी-नकटी पक्षी अभयारण्य स्थानीय पक्षियों और सर्दियों के दौरान यूरेशिया, मध्य एशिया, आर्कटिक ध्रुव, रूस और उत्तरी चीन जैसे स्थानों से आने वाले प्रवासी पक्षियों की विविध प्रजातियों का पर्यावास रहा है।
- यहाँ पाई जाने वाली प्रमुख पक्षी प्रजातियों में इंडियन कौरसर, इंडियन सैंडग्राउज़, येलो-वॉटलड लैपवगि और इंडियन रॉबिन शामिल हैं।

वर्ष 2020 में नए रामसर स्थल (New Ramsar Sites in 2020)

संदर्भ

वर्ष 2020 में पाँच स्थलों/साइटों को रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमि (Wetlands of International Importance under the Ramsar Convention) के रूप में मान्यता दी गई थी।

नए स्थल

- **आसन संरक्षण रज़िर्व (Asan Conservation Reserve)**
 - आसन संरक्षण रज़िर्व देहरादून में उत्तराखंड-हिमाचल सीमा पर एक छोटे से शहर हरबतपुर के पास स्थिति एक मानव निर्मित आर्द्रभूमि है।
- **काबरताल आर्द्रभूमि (Kabartal Wetland)**
 - काबरताल आर्द्रभूमि बिहार की पहली आर्द्रभूमि है जिसे रामसर स्थल के रूप में चिह्नित किया गया है। इसे कांवर झील (Kanwar Jheel) के नाम से भी जाना जाता है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे जल की गोखुर झील (Ox Bow Lake) है जिसमें बूढ़ी गंडक नदी का बाढ़ का मैदान शामिल है।
- **लोनार झील (Lonar Lake)**
 - दक्कन के पठार की ज्वालामुखीय बेसाल्ट शैल में स्थिति लोनार झील का निर्माण 35,000 से 50,000 वर्ष पूर्व एक उल्कापात के प्रभाव से हुआ था।
 - यह झील लोनार वन्यजीव अभयारण्य का अंग है जो मेलघाट टाइगर रज़िर्व (MTR) के एकीकृत नियंत्रण में है।
- **सूर सरोवर झील (Soor Sarovar Lake)**
 - सूर सरोवर झील को कीठम झील (Keetham lake) के नाम से भी जाना जाता है जो सूर सरोवर पक्षी अभयारण्य (वर्ष 1991 में अधिसूचित) के अंदर स्थिति है।
 - यह झील उत्तर प्रदेश के आगरा में यमुना नदी के किनारे स्थिति है।
- **त्सो कर आर्द्रभूमि (Tso Kar Wetland)**
 - त्सो कर (Tso Kar) लद्दाख के चांगथांग (Changthang) क्षेत्र में समुद्र तल से 4,500 मीटर की ऊँचाई पर स्थिति एक उच्च तुंगता आर्द्रभूमि है।
 - यह एक अनूठा स्थल है जहाँ विपरीत रासायनिक संरचना वाली दो झीलें—मीठे जल की स्टार्टसपुक त्सो (Startsapuk Tso) और वृहत उच्च लवणीय त्सो कर (Tso Kar) आसपास स्थिति हैं।
 - त्सो कर का अर्थ है सफ़ेद झील (white lake)। अत्यधिक खारे पानी के वाष्पीकरण से किनारे पर जमने वाली सफ़ेद नमक की पपड़ी के कारण इसे यह नाम मिला है।

वर्ष 2021 में नए रामसर स्थल (New Ramsar Sites in 2021)

संदर्भ

अगस्त 2021 में चार अन्य भारतीय स्थलों (हरियाणा और गुजरात दोनों से दो-दो स्थल) को रामसर कन्वेंशन के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमि (Wetlands of International Importance under the Ramsar Convention) के रूप में मान्यता दी गई है। इसके साथ ही भारत में रामसर स्थलों की कुल संख्या 46 हो गई है।

नए स्थल

- **भंडावास वन्यजीव अभयारण्य (Bhindawas Wildlife Sanctuary)**
 - झज्जर में स्थिति भंडावास वन्यजीव अभयारण्य मानव निर्मित मीठे जल की आर्द्रभूमि है। यह हरियाणा की सबसे बड़ी आर्द्रभूमि है। 250 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ पूरे वर्ष इस अभयारण्य का उपयोग विश्राम स्थल के रूप में करती हैं।
- **सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान**
 - यह हरियाणा राज्य के दो राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है। हरियाणा में स्थिति दूसरा राष्ट्रीय उद्यान कालेसर राष्ट्रीय उद्यान है।
- **थोल झील वन्यजीव अभयारण्य (Thol Lake Wildlife Sanctuary)**
 - गुजरात के सबसे लोकप्रिय पक्षी स्थलों (birding hotspots) में से एक थोल झील वन्यजीव अभयारण्य अहमदाबाद के नजिक स्थिति है।
- **वधवना आर्द्रभूमि (Wadhvana Wetland)**
 - वडोदरा (गुजरात) में स्थिति वधवना आर्द्रभूमि विटलैंड अपने पक्षी आश्रय स्थल के लिये अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह सेंट्रल एशियन फ़्लाइवे से होकर प्रवास को जाती 80 से अधिक पक्षी प्रजातियों को शीतकालीन प्रवास आश्रय प्रदान करती है।

नॉगखिल्लेम वन्यजीव अभयारण्य (Nongkhylllem Wildlife Sanctuary)

संदर्भ

भारत के पहले बाँस के वृक्षों पर रहने वाले चमगादड़ (Bamboo-Dwelling Bat- Eudiscopus Denticulus), जिनके पंजों के आंतरिक हिस्से चपिचपि (Sticky Discs) होते हैं, नॉगखिल्लेम वन्यजीव अभयारण्य में पाए गए हैं।

प्रमुख बदि

- मेघालय के री भोई ज़िले में अवस्थित यह अभयारण्य पूर्वोत्तर भारत के सर्वोत्कृष्ट संरक्षित क्षेत्रों में से एक है। यह पूर्वी हिमालयी जैव विविधता हॉटस्पॉट (Eastern Himalayan Biodiversity Hotspot) के अंतर्गत आता है।
- यह उमरान, उम्मगि, उमपुरथहि और उमरू जैसी नदियों और जलधाराओं से प्रवाहित है। अभयारण्य के दक्षिणी भाग में बीरबाह (Birbah) नाम की एक प्राकृतिक झील भी मौजूद है।
- यह अभयारण्य रॉयल बंगाल टाइगर, क्लाउडेड लेपर्ड, इंडियन बाइसन और हिमालयन ब्लैक बयिर जैसी विभिन्न जंतु प्रजातियों को आश्रय और पोषण प्रदान करता है।
- यहाँ मणपुरि बुश क्वेल, रूफस नेकड हॉर्नबिल और ब्राउन हॉर्नबिल जैसी दुर्लभ पक्षी प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं।
- मेघालय के अन्य संरक्षित क्षेत्रों में सजु वन्यजीव अभयारण्य (Siju Wildlife Sanctuary), नरपुह वन्यजीव अभयारण्य (Narpuh Wildlife Sanctuary), बाघमारा पचिर प्लांट अभयारण्य (Baghmara Pitcher Plant Sanctuary) और नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान (Nokrek National Park) शामिल हैं।

पैगोंग त्सो

संदर्भ

लद्दाख की पैगोंग त्सो झील भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच आमने-सामने होने की साक्ष्य रही।

पैगोंग त्सो के बारे में

- लगभग 4,350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित पैगोंग झील विश्व की सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित खारे पानी की झील है।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान बार-सरि वाले हंस (Bar-Headed Goose) और ब्राह्मणी बतख (Brahmini Ducks) आमतौर पर यहाँ देखे जाते हैं।
- झील के आसपास के क्षेत्र में कआंग और मरमोट सहित वन्यजीवों की कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- झील में बड़ी मात्रा में मछलियाँ हैं, विशेष रूप से शज़िपोपाइगोप्ससि स्टोलज़िका (Schizopygopsis stoliczka) और राकोमा लेबियाटा (Racomia labiata)।
- लगभग 160 किमी. तक फैली पैगोंग त्सो झील का एक तह्राई हसिसा भारत में और अन्य दो-तह्राई चीन में स्थित है।
- झील की यात्रा करने के लिये एक इनर लाइन परमिट की आवश्यकता होती है क्योंकि यह चीन-भारतीय वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थित है।

पन्ना टाइगर रज़िर्व

संदर्भ

पन्ना टाइगर रज़िर्व को मैन एंड बायोस्फीयर (MAB) कार्यक्रम के तहत विश्व नेटवर्क ऑफ बायोस्फीयर रज़िर्व (डब्ल्यूएनबीआर) में शामिल किया गया है। एमएबी कार्यक्रम में भारत के सूचीबद्ध 18 बायोस्फीयर रज़िर्व में से 12 बायोस्फीयर रज़िर्व शामिल हैं।

पन्ना टाइगर रज़िर्व के बारे में

- पन्ना टाइगर रज़िर्व वधिय में दककन परायद्वीप, ऊपरी गंगा के मैदान और अरुंध-शुष्क गुजरात राजपुताना के संगम के निकट स्थित है, जो तीन जैव-भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव को दर्शाता है।
- वर्ष 1981 में पन्ना राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया था और वर्ष 1994 में इसे टाइगर रज़िर्व घोषित किया गया था। वर्ष 2011 में, पन्ना को केंद्रीय पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा बायोस्फीयर रज़िर्व के रूप में नामित किया गया था।
- पचमढ़ी और अमरकंटक के बाद, यह विश्व नेटवर्क ऑफ बायोस्फीयर रज़िर्व में शामिल होने वाला भारत का 12 वां बायोस्फीयर रज़िर्व है, और मध्य प्रदेश से तीसरा है।
- केन नदी रज़िर्व के माध्यम से दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।
- जीव:** बाघ के अलावा यह तेंदुए, नीलगाय, चकिरा, चौसधा, चीतल, चित्तीदार बिल्ली, साही और सांभर जैसे अन्य जानवरों का नविस स्थल है। घड़ियाल (लंबे थूथन वाले मगरमच्छ) और मुग्गर (दलदली मगरमच्छ) केन नदी में पाए जा सकते हैं।

पोबतिरा वन्यजीव अभयारण्य

संदर्भ

हाल के अनुमानों के अनुसार, पोबतिरा ने अपनी वन्यजीव अभयारण्य की क्षमता को पार कर लिया है जिसके चलते गैंडों को असम के अन्य क्षेत्रों में स्थानांतरित करने की आवश्यकता हो सकती है।

पोबतौरा वन्यजीव अभयारण्य के बारे में

- पोबतौरा वन्यजीव अभयारण्य असम के मोरीगांव ज़िले में ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। गरंगा बिल पोबतौरा के दक्षिण में स्थित है।
- यह अपनी घासों के लिये प्रसिद्ध है जसिमें सनियोडोन डैक्टिलोन, वहपि ग्रास (Hemarthria Compressa), वेटविर (Chrysopogon zizanioides), रेवेना घास (Saccharum Ravennae), फ्रागमाइटस कारका आदि शामिल हैं।
- पोबतौरा डब्ल्यूएलएस (Pobitora WLS) को वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ कुछ भौगोलिक विशेषताओं के समान सुविधाओं के लिये 'मिनी काजीरंगा' (Mini Kaziranga) भी कहा जाता है।

सरसिका टाइगर रज़िर्व

संदर्भ

नए शावक के जन्म के साथ ही सरसिका में बाघों की संख्या 21 हो गई है।

सरसिका टाइगर रज़िर्व के बारे में

- यह राजस्थान के अलवर ज़िले में एक बाघ अभयारण्य है जसिमें झाड़ीदार कांटेदार जंगल, शुष्क परणपाती वन, घास के मैदान और चट्टानी पहाड़ियाँ शामिल हैं।
- इसे 1978 में भारत के प्रोजेक्ट टाइगर का हिस्सा बनाते हुए टाइगर रज़िर्व का दर्जा दिया गया था।
- यह उत्तरी अरावली में तेंदुए और वन्यजीव गलियारे में एक महत्वपूर्ण जैव विविधता क्षेत्र है।
- जीव:** बंगाल टाइगर के अलावा, रज़िर्व में भारतीय तेंदुआ, जंगली बिल्ली, काराकल, धारीदार लकड़बग्घा, सुनहरा सियार, चीतल, सांभर हरिण, छोटा भारतीय सविट, जावन नेवला, सुर्ख नेवला, रीसस मकाक सहित कई वन्यजीव प्रजातियाँ शामिल हैं। उत्तरी मैदान के ग्रे लंगूर और भारतीय खरगोश पाए जाते हैं।
- वनस्पति:** जंगलों में प्रमुख वृक्ष ढोक (Anogeissus pendula) है। अन्य पेड़ों में सालार (Boswellia serrata), कदया (Sterculia urens), ढाक (Butea monosperma), गोल (Lansea coromandelica), बेर (Ziziphus mauritiana), और खैर (Acacia catechu) शामिल हैं।

सतकोसिया बाघ अभयारण्य

संदर्भ

हाल ही में राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण ने ओडिशा को [सतकोसिया बाघ अभयारण्य](#) पर पर्यटन के प्रतिकूल प्रभाव पर एक स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिये कहा है।

सतकोसिया बाघ अभयारण्य के बारे में :

- सतकोसिया बाघ अभयारण्य को वर्ष 2007 में नामित किया गया था और इसमें सतकोसिया गॉर्ज वन्यजीव अभयारण्य और नकिटवर्ती बैसपिल्ली वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं।
- यह वह स्थान है जहाँ महानदी नदी पूर्वी घाट में 22 किलोमीटर लंबी घाटी से होकर गुजरती है।
- टाइगर रज़िर्व पूर्वी हाइलैंड्स नम परणपाती वन ईकोरियोजन में स्थित है।
- जीव:** तेंदुआ, भारतीय जंगली कुत्ता या ढोल, जंगली सूअर, धारीदार लकड़बग्घा, सुस्त भालू, तेंदुआ बिल्ली, चित्तीदार हरिण, सांभर हरिण, भौकने वाले हरिण, लंगूर, साही और पैंगोलिन। यहाँ के सरीसृपों में मगर मगरमच्छ और घड़ियाल शामिल हैं।
- वनस्पति:** प्रमुख पादप समुदाय साल (शोरिया रोबस्टा) और नदी के किनारे स्थित जंगल सहित मशरिफ परणपाती वन हैं।

शतरुंजय हलिस रज़िर्व फॉरेस्ट

संदर्भ

गुजरात के शतरुंजय हलिस रज़िर्व फॉरेस्ट एरिया में आग लग गई।

शतरुंजय हलिस रज़िर्व फॉरेस्ट के बारे में

- शतरुंजय रज़िर्व फॉरेस्ट, पहाड़ी, शुष्क और परणपाती जंगल का एक हिस्सा है। यह एशियाई शेरों और तेंदुओं के साथ-साथ नीले बैल जैसे शाकाहारी जीवों का घर है।
- पहाड़ियाँ शतरुंजी नदी के तट पर स्थित हैं और जैनियों द्वारा पवतिर पहाड़ी मानी जाती हैं।
- पहाड़ियाँ दक्षिण में खंभात की खाड़ी और उत्तर में भावनगर शहर से घरी हुई हैं।

- जब ऋषभनाथ ने पहाड़ी के ऊपर अपना पहला उपदेश दिया तबइन पहाड़ियों को पवतिर किया गया था। ऋषभनाथ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे।

समिलिपाल बायोस्फीयर रज़िर्व

संदर्भ

[समिलिपाल बायोस्फीयर रज़िर्व](#) में जंगल का एक बड़ा हिस्सा हाल ही में आग की चपेट में आ गया था।

समिलिपाल बायोस्फीयर रज़िर्व के बारे में

- समिलिपाल बायोस्फीयर रज़िर्व दो जैव-भौगोलिक क्षेत्रों के भीतर स्थित है- ओरेंटल क्षेत्र के महानदयिन पूर्वी तटीय क्षेत्र और दक्कन प्रायद्वीपीय क्षेत्र के छोटानागपुर जैविक प्रांत।
- यह ऊँचें पठारों और पहाड़ियों से घिरा हुआ है, इसमें सबसे ऊँची चोटी खैरीबुरु और मेघाशानि (समुद्र तल से 1515 मीटर ऊपर) की जुड़वाँ चोटियाँ हैं। बुद्धबलंग, बैतरणी और सुवर्णरेखा जैसी प्रमुख नदियों में कई झरने और बारहमासी धाराएँ बहती हैं।
- इसे औपचारिक रूप से वर्ष 1956 में टाइगर रज़िर्व नामित किया गया था और वर्ष 1973 में इसे प्रोजेक्ट टाइगर के तहत लाया गया था।
- इसे जून 1994 में भारत सरकार द्वारा बायोस्फीयर रज़िर्व घोषित किया गया था।
- यह वर्ष 2009 से यूनेस्को के विश्व नेटवर्क ऑफ बायोस्फीयर रज़िर्व का हिस्सा रहा है।
- यह समिलिपाल-कुलडीहा-हदगढ़ हाथी रज़िर्व का हिस्सा है, जिसे मयूरभंज हाथी रज़िर्व के नाम से जाना जाता है, जिसमें 3 संरक्षित क्षेत्र समिलिपाल टाइगर रज़िर्व, हाडागढ़ वन्यजीव अभयारण्य और कुलडीहा वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं।
- दो जनजातियाँ, एरेंगा खारिया और मनकीरडिया, रज़िर्व के जंगलों में निवास करती हैं और पारंपरिक कृषि गतिविधियों (बीज और लकड़ी का संग्रह) में संलग्न हैं।

श्रीवल्लिपुथुर-मेगामलाई टाइगर रज़िर्व

संदर्भ

हाल ही में तमलिनाडु में श्रीवल्लिपुथुर-मेगामलाई टाइगर रज़िर्व को मंजूरी दी गई है। यह टाइगर रज़िर्व तमलिनाडु का पाँचवाँ और भारत का 51वाँ टाइगर रज़िर्व है।

श्रीवल्लिपुथुर-मेगामलाई टाइगर रज़िर्व के बारे में

- टाइगर रज़िर्व बनाने हेतु श्रीवल्लिपुथुर ग्रजिल्ड जायंट स्कवरिल सैक्युरि और मेगामलाई वाइल्डलाइफ सैक्युरि में 1,01,657.13 हेक्टेयर या 1016.5713 कमी. के क्षेत्र को मिलाकर टाइगर रज़िर्व बनाया गया है।
- मेघमलाई वन्यजीव अभयारण्य थेनी और मदुरै (हाईवेवस परवत और इलायची पहाड़ियों) के जिलों में फैला हुआ है, जबकि श्रीवल्लिपुथुर ग्रजिल्ड गलिहरी वन्यजीव अभयारण्य केरल के पेरियार टाइगर रज़िर्व के साथ स्थित है।
- **जीव:**
 - इसमें मेघमलाई अनगुलेट्स (खुर वाले सतनपायी), चित्तीदार हरिण, भारतीय गौर, जंगली सूअर आदि पाए जाते हैं।
 - श्रीवल्लिपुथुर में घड़ियाल वशाल गलिहरियों, उड़ने वाली गलिहरियों, तेंदुओं, नीलगरितहरों, सांभर, हाथी, सहि-पूछ वाले मकाक आदि पाए जाते हैं।
- तमलिनाडु में अन्य टाइगर रज़िर्व कलक्कड़ मुंडनथुराई, अनामलाई, मुदुमलाई और सत्यमंगलम हैं।

तलारी संरक्षण रज़िर्व

संदर्भ

महाराष्ट्र वन विभाग ने सधुदुर्ग जिले में स्थित डोडामर्ग वन क्षेत्र के लगभग 29.53 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को '[तलारी संरक्षण रज़िर्व](#)' (Tillari Conservation Reserve) घोषित किया है।

तलारी संरक्षण रज़िर्व के बारे में

- यह 38 किलोमीटर लंबा डोडामर्ग वन्यजीव गलियारा (पहले) है जो महाराष्ट्र में राधानगरी वन्यजीव अभयारण्य को कर्नाटक के भीमगढ़ वन्यजीव अभयारण्य से जोड़ता है इसमें अक्सर हाथी और बाघ की आवाजाही को देखा जाता है।
- तलारी रज़िर्व में अर्द्ध-सदाबहार वन, उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं।

